Airo International Research Journal
Peer Reviewed Multidisciplinary Indexed Journal
ISSN: 2320-3714
Volume:20 Issue:1 January 2020

बदलते दौर में मीडया की जवाबदेही

मुकु ग्रवालट
डसस्टेंटप्रोफे सर
पत्रकाररताव जनसंचारडवभाग
के.एल.पी. कॉलेज, रेवाडी

मीडडया डभव्यडि का एक ऐसा माध्यम है जहा ाँएक तरफ यह लोगों के डवचार को एक रूप देता है वही दूसरी तरफ पाठकों को अकर्षषत करने के डलए कु छ मुद्दों का प्रस्तुडतकरणका तरीका ईसको डववादास्पद रुप दे देता है। मीडडया की समाज मेंकाफी महत्त्वपूणणभूडमकाहै। मीडडया को लोकतांडत्रकव्यवस्था का चौथा स्तंभ भी कहा जाता है, क्योंकक आसकी डजम्मेदारी देश और लोगों की समस्याओं को सामने लाने के साथ–साथ सरकार के कामकाज पर नजर रखना भी है। लेककन डपछले कु छ कदनं मेंमीडडया की कायणप्रणालीऔर रुख पर सवाल ईठने शुरू हो गए हैं।सवाल यह है कक क्या मीडडया बदल रहा है? क्या मीडडया के नैडतक पक्ष पर ऐसे सवाल जायज हैं?

मीडडया की अजा दी–

जहां तक मीडडया की अजादी का सवाल है, दुडनया मेंएक डतहाइ से ज्यादा लोग ऐसे देशों मेंरहते हैंजहां मीडडया पनी कदश तय करने के डलए स्वतंत्र नहीं है। भारत मेंमीडडया की अजादी पर कफलहाल कोइ ज्यादा गंभीर खतरा नहीं है। दूरदशणनऔर अकाशवाणी जैसी सरकारी संस्थाओं को छोड देंतो ककसी भी डनजी चैनल पर सरकार का दबदबा नहीं रहता। यहां गर हम दूसरेदेशों की बात करेंतो कफनलैंड,नावे और नीदरलैंडमीडडया की अजादी के मामले मेंसबसे उपर हैं।आस कसौटी पर आरीरिया, ईत्तर कोररया और सीररया जैसेदेश सबसे डनचले पायदान पर हैं। आन देशों मेंमीडडया को पने डहसाब से मुद्दों पर खबरेंदेनेया बात करने की कोइ अजादी हाडसल नहीं है। वहां मीडडया एक तरह से सरकार के धीन काम करता है। हालात का ंदाजा आसी से लगाया जा सकता है कक आरीरिया मेंसबसे ज्यादा पत्रकार जेल मेंबंद हैं। [1]

क्या मीडडया पनी ताकत का गलत आस्तेमाल कर रहा है? 'पेड न्यूज' की जो बात ईठाइ जा रही है, ईसमेंककतनी सच्चाइ है? क्या मीडडया के पने दायरे मेंभी भ्रष्टाचार है? अज प्रप्रट और आलेक्ि ॉडनक्मीडडया के दोनों माध्यमों के सामने पनी

Airo International Research Journal
Peer Reviewed Multidisciplinary Indexed Journal
ISSN: 2320-3714
Volume:20 Issue:1 January 2020

डवश्वसनीयता बचाने की बहुत बडी चुनौती है। आंटरनेटके जमाने मेंआनकी लोकडप्रयता मेंकमी अइ है। प्रप्रट और आलेक्ि◌ॉडनक मीडडया की भूडमका और ईन पर डनभणरता लगातार कम होती जा रही है।

मीडडया और समाज-

अज के समाज मे मीडडया पैसा कमाने के लालच मेंसमाज को गुमराह कर रहा है। टी.वी. तो आससे भी चार कदम अगे है। टी. वी. पर चैनलों की जैसेबाढ़ सी अइ हुइ है। हर ककसी का ध्येय है उाँ चीटी. अर. पी. याडन डधक से डधक पैसा। ज़रा देडखए न्यूज़ चैनल पर अप को क्या देखनेको डमलता है? सुबह- सुबह चाय के साथ पना भडवष्य जाडनये। कदन मेंटी. वी. सीररयलों की गपशप देडखए। 'क्राआम पैि◌ोल' चैन से रात को देडखए 'सनसनी' या सोना है तो जाग जाआए ऐसा लगता है कक समाज मेंया तो के वल पराध हैंया कफर हीरो-हीरोआनो के स्कैं डल। दा◌ाँ क्या कहीं कु छ च्छा नहीं है? सनसनी' फै लानेके डलए ये देश की सुरक्षा को भी व पर लगाने से नहीं चूकते।26\11 को हमकै सेभूल सकते हैं।बडे-बडे चैनलों पर पूरी कायणवाही का सीधा-प्रसारण कदखाया गया। डजससे होटल मेंघुसेअतंकवादी बाहर होने वाली हलचल से वाककफ होते रहे और हमारा डधक से डधक नुकसान करते रहे।

बीरभूम सामूडहक बलात्कार मामले मेंमीडडया मेंडजतनी खबरेंअआं, वे बताती हैंकक मीडडया भी शायद वगीय अग्रहों से संचाडलत होता है। ईसे लेकर ईडचत ही मीडडया और ईन खबरों पर सवाल ईठे । मीडडया के ऐसे रूप को देख कर जोसेफ स्टाडलन का एक ईद्धरण याद अता है- 'डसफण एक मौत शोकांत है और संख्य मृत्यु अंकडा!'[2]

मीडडया की राष्ट्रीय प्रडतबद्धता-

जनसंचार व पत्रकाररता संक्रमण के दौर से गुज़र रही है। क्षुद्र- स्वाथण व लालच, राष्ट्रीय डहतों पर हावी हो रहे हैं।ककसी भी मुद्देको बेवजह तूल देकर सामाडजक रूप से डवघटन की डस्थडत पैदा की जा रही है। डवघटनकारी ताकतेंसंचार माध्यमों के द्वारा पने कु डत्सत षड्यंत्रकारी चालो से जन-समुदाय को भ्रडमत कर पने मंसूबोंमेंकामयाब हो रही हैं। डभव्यडि की अजादी के नाम पर देशद्रोही नारों से देश को टुकडे-टुकडेकरने की डवचारधारा को संवैधाडनकठहराया जा रहा है। डजनकी

मंसूबेभारत डहत मेंनहीं है ऐसे लोगों को स्टार बना कर ईनके बडे-बडे साक्षात्कार लाआव कदखाए जा रहे हैं।ईनके फै न फॉलोआंग बढ़ रही है।अतंकवाकदयोंके जनाजों में हजारों की भीड ईमड रही है। बडे-बडे डवश्वडवद्यालय राजनीडतक व गैर-सामाडजक गडतडवडधयं का खाडा बन रहे हैं,जहा ँचररत्र-पतन के सब काम होते हैं,डसवाय पढ़ाइ-डलखाइ के ।

मीडडया से यह पेक्षा की जाती है कक समाचार-सम्प्रेषण मेंडनष्पक्षता का पररचय दें।ककतु प्रायः यह देखनेको डमलता है कक वररष्ठ पत्रकार ककसी डवशेष राजनीडतक दल के पक्ष मेंतथा ईसके डवरोधी दल के डवपक्ष में पना डवचार प्रकट करते हैं।ककसी भी प्रलोभन थवा दबाव मेंअकर ऐसा करना, न तो पत्रकाररता के डसद्धांतों के नुकू लहै और न ही मानवता थवा नैडतकता है। आनके पक्षपातपूणणलेखों और दुभाणवनापूणणसमाचार सम्प्रेषणों से जन-मानस भ्रडमत और प्रदूडषत होता है। सत्ता लोलुप एवं सुडवधाभोगी पत्रकाररता से न तो स्वस्थ लोकमत का डनमाणण होता है और न ही राष्ट्रीय डहतों को कोइ लाभ पहुँचताहै। तहलका प्रकरण से ये अभास डमलता है कक खोजी और डनष्पक्ष पत्रकाररता के मागण में नेक बाधाएँहैंऔर कइ मामलों में पत्रकारों को पने जीवन की सुरक्षा के डलए भी प्रचडतत होना पड सकता है। तः मीडडया का यह दाडयत्व बनता है कक वह समाचार-डवश्लेषण मेंमयाणदा, संयम और
डनष्पक्षता पर डवशेष ध्यान दे। डभव्यडि की स्वतंत्रता को डभव्यडि की प्रडतबद्धत का रूप नहीं प्रदान करना चाडहए। [3]

अज की पत्रकाररता सुडवधाभोग एवं सत्तासुख की प्राडि का व्यापार प्रतीत होती है। आसमेंमूल्यगत डगरावटस्पष्ट दृडष्टगोचर होती है. ईद्योगपडत, शासन, प्रशासन, डधकरण एवं ईपक्रम के प्रडत पररक्रमा ही आसका धमण है। पराध, बलात्कार एवं हत्या, क्षेत्रीयता, जातीय समीकरण, साम्प्रदाडयकता को थणवत्ता प्रदान करने का ईपक्रम प्रसारण द्वारा पत्रकाररता थोपाजणन के डलए क्रय-डवक्रय का व्यापार है। पत्रकाररता का पराधीकरण, वादीकरण और राजनीडतकरण मूल्यों के ह्रास का ही दुष्पररणाम है.

मीडडया के लोकताडन्त्रक मूल्य-

लोकताडन्त्रक मूल्य भी मानवीय मूल्यों से ही सम्बल प्राि करते हैं।परंपरा प्रगडत एवं समृडद्ध का तब वरोधक बन जाती है जब मूल्यहीन होती है। पत्रकाररता मूल्यगत परंपरा को प्रस्तुत कर डवद्याथी, डनराला, जोगलेकर ईत्पन्न करती है।

पुलवामा अतंकी हमले के बाद डजस प्रकार से भारतीय न्यूज़ चैनलों में पाककस्तान से मेहमान बुलाकर टीअरपी बटोरने की कोडशश की गइ, वह बेहद शमणनाक है। देश जब पुलवामा अतंकी हमले पर दुख व्यि कर रहा था, तब शहीद जवानों में से ककसी एक के पुत्र को चैनल पर बुलाकर ईनके सामने कश्मीर से गेस्ट के साथ बहस कराया गया।

ब अप ही सोडचए कक मीडडया का स्तर कहां है। अज अलम यह है कक लोग न्यूज़ चैनलों को ईनके नाम से नहीं बडल्क भाजपा और काा ँग्रेसके चैनल के तौर पर पुकारतेहैं। [4]

मीडडया को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ यूंही नहीं कहा जाता है। लोकतंत्र में आसकी बहुत बडी भूडमका है और गर यह भूडमका को सही तरह से डनवणहन नहीं करेगा तो कफर पूरेदेश के डलए मुडश्कल की घडी होगी। मीडडया को चाडहए कक वह छोटे व सीडमत स्वाथों के दायरे से बाहर डनकलकर डवराट दृडष्ट रखते हुए समाज व राष्ट्र के डहताथण पने कतणव्यों को समझेंऔर ईन्ही के नुरूप अचरण करे। भारतीय लोकतंत्र मेंराजनीडत नैडतकता डवहीन हो गयी है। ईसे सही पट्टी पर लाने के डलए मीडडया को इमानदार तथा डनष्पक्ष होना होगा।

मीडडया यकद पने डनडहत स्वाथों को भूलकर पनी डज़म्मेदारी डनभाए तो समाज को एक कदशा प्रदान कर सकता है। मीडडया पराध की खबरों को कदखाए पर सकारात्मक समाचारों से भी ककनार न करे। समाज मेंफै ली बुराआयों के लावा डवकास को भीकदखाए ताकक अम अदमी डनराशा मेंडूबा न रहे कक आस देश का कु छ नहीं हो सकता।

संचार व संवाद की सांस्कृ डतकपृष्ठभूडमसदा मानव मूल्यों व राष्ट्रीय डहतों के साथ मनुष्य की डस्मता को यथावत बनाए रखते हुए नइ उं चाआयों की ओर ईसका मागणप्रशस्त करें।ऐसी मंगल कामना के साथ मैंसाडहत्य व जनसंचार की ककर्स भी डवधा से प्रत्यक्ष या प्रत्यक्ष रूप से जुडेसाधक व नुयायी को एक नइ डशडक्षत संयडमत, नुशाडसत, डनरोग, प्रफु डल्लत, स्वतंत्र व प्रकाशमान डवश्व के डनमाणणाथण पनी शुभकामनाएँप्रेडषत करता हाँ।

References-

1 https://khabar.ndtv.com/news/blogs/is-media-crossing-its-limits-384898

2 sushilkm.blogspot.com/2014/

3 https://reedias.com/page.php?id=28

4 https://www.youthkiawaaz.com/2019/02/role-of-media-in-present-day-hindi-article/

*****